डॉ० करुणा शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग - श्री गुरु गोविन्द सिंह कॉलेज
पटना सिटी - Email- Karuna - 1812@
Yahoo. co. in

हिन्दी साहित्य का इतिहास (काल विभाजन और नामकरण)

मानव सभ्यता की भाँति साहित्य का भी इतिहास होता है। जैसे इतिहास में आप सभी पढ़ते हैं कि मुगल काल कब से कब तक था, गुप्त वंश के शासक कौन थे, वैशाली का गणराज्य कैसे सफल रहा वैसे ही हिन्दी साहित्य के इतिहास के बारे में जानकारी उपलब्ध है। साहित्य के इतिहास में आपको बताया जायेगा कि किसी काल विशेष में कौन सी प्रवृत्ति प्रमुख थी, उस काल में कौन-कौन से कवि प्रमुख थे तथा वह काल कब से शुरु हुआ और उसकी सीमा कहाँ तक थी। साथ ही विविध विद्वानों ने किन आधारों पर यह नामकरण और काल विभाजन किया यह भी बताया जायेगा। आप ध्यानपूर्वक इस पाठ के माध्यम से हिन्दी साहित्य के इतिहास को दुहराने का काम करेंगे।

किसी भी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन करने की सर्वाधिक उपयुक्त प्रणाली उस साहित्य में प्राप्त विविध प्रवृत्तियों के आधार पर उसे विभाजित करना है। कुछ अलग प्रवृत्तियाँ भी उस काल खंड में मिलती हैं पर वे कम मात्रा में रहती हैं। इस संबंध प्रसिद्ध विद्वान आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का मत है कि "प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है। यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति में परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है। आदि से अन्त तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परम्परा को परखते हुए साहित्य परम्परा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही साहित्य का इतिहास कहलाता है।"

हिन्दी साहित्य के इतिहास की सामग्री 'भक्तमाल' 'चौरासी वैष्णव की वार्ता और 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' आदि ग्रन्थों में मिलती है किन्तु काल विभाजन और नामकरण की ओर इनकी दृष्टि नहीं गई है। इस ओर पहला प्रयास फ्रांसीसी विद्वान गार्सा द तासी ने किया। इन्होंने फ्रेन्च भाषा में 'इस्तवार द ला लितेरात्युर एंदुई ए हिन्दुस्तानी' नामक पुस्तक में हिन्दी और उर्दू के कई कवियों का वर्णन किया है। इसी क्रम में शिवसिंह सेंगर ने 'शिवसिंह सरोज' लिखा है जिसमें लगभग एक हजार

कवियों के जीवन वृत्त और उनकी रचनाओं का जिक्र है पर काल विभाजन का इसमें कोई संकेत नहीं है। इस संबंध में पहला प्रयास जार्ज ग्रियर्सन ने किया। इन्होंने हिन्दी साहित्य को ग्यारह शीर्षकों के अंतर्गत विभाजित किया। इस विभाजन में कई असंगतियाँ, कमियाँ तथा भूलें हैं, फिर भी प्रथम प्रयास होने के कारण इसका एक अलग महत्त्व है। इनके पश्चात मिश्र बन्धुओं ने अपने 'मिश्र-बन्धु-विनोद' (1913) ई० में काल विभाजन का प्रयास किया, जो ग्रियर्सन से अधिक विकसित है। इनका विभाजन इस प्रकार है –

(1) आरम्भिक काल – पूर्व आरंभिक काल – (600 – 1343) वि०
उत्तर आरंभिक काल – (1344 – 1444) वि०
(वि० = विक्रम संवत)

(2) माध्यमिक काल – पूर्व माध्यमिक काल – (1445 – 1560 वि०)
प्रौढ़ माध्यमिक काल – (1561 – 1580 वि०)

(3) अलंकृत काल – पूर्व अलंकृत काल – (1681 – 1790 वि०)
उत्तर – अलंकृत काल – (1791 – 1889 वि०)

(4) परिवर्तन काल – (1890 – 1925 वि०)

(5) वर्तमान काल – (1926 वि० से अबतक) ✩

मिश्र बंधुओं के पश्चात आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सन् ~~1934~~ 1929 में 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' प्रस्तुत करते हुए काल विभाजन का नया प्रयास किया। इनके काल-विभाजन में अधिक सरलता, स्पष्टता और सूक्ष्म निरीक्षण दिखते हैं। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण वह आजतक सर्वमान्य एवं सर्वत्र प्रचलित है। उनका काल विभाजन इस प्रकार है –

(1) आदिकाल (वीरगाथा काल) संवत 1050 से 1375
(2) पूर्व मध्यकाल (भक्ति काल) संवत 1375 से 1700
(3) उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) संवत 1700 से 1900
(4) आधुनिक काल (गद्यकाल) संवत 1900 से अबतक

✩ (यहाँ यह बता दूँ कि मिश्र बंधुओं के नाम इस प्रकार हैं – पं० गणेश बिहारी मिश्र, डॉ० श्याम बिहारी मिश्र एवं डॉ० शुकदेव बिहारी मिश्र)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी के पश्चात डॉ० रामकुमार वर्मा का काल विभाजन उल्लेखनीय है जो इस प्रकार है – (i) सन्धि काल – (750 – 1000 वि०)
(ii) चारण काल (1000 – 1375 वि०)
(iii) भक्तिकाल (1375 – 1700 वि०)
(iv) रीतिकाल (1700 से 1900 वि०)
(v) आधुनिक काल (1900 वि० से अबतक)

इन्होंने शुक्लजी की तरह ही काल विभाजन किया है। सिर्फ, 'वीरगाथा काल' के स्थान पर 'चारणकाल' एवं 'सन्धिकाल' नाम दिया है।

इस क्रम में अगले साहित्य के इतिहासकार श्यामसुंदर दास ने भी शुक्लजी की परंपरा का निर्वाह किया। सिर्फ संवत का काल कुछ वर्षों का आगे पीछे किया—

(1) आदिकाल - (वीरगाथा का युग संवत 1000 से संवत 1400 तक)
(2) पूर्व मध्ययुग (भक्ति का युग, संवत 1400 से संवत 1700 तक)
(3) उत्तर मध्ययुग (रीतिग्रन्थों का युग संवत - 1700 से संवत 1900 तक)
(4) आधुनिक युग (नवीन विकास का युग, संवत 1900 से अब तक)

इनके पश्चात डॉ० गणपति चन्द्रगुप्त ने अपनी पुस्तक - 'हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास' में इस प्रकार से काल विभाजन किया —

(1) प्रारम्भिक काल - (1184 - 1350 ई०)
(2) पूर्वमध्यकाल - (1350 - 1600 ई०)
(3) उत्तर मध्यकाल - (1600 - 1857) ई०
(4) आधुनिक काल - (1857 ई० अब तक)

आधुनिक काल में डॉ० नगेन्द्र ने विविध मतों का संग्रह करते हुए स्वयं के निष्कर्ष को भी ध्यान में रखा है। उन्होंने हिन्दी साहित्य का काल विभाजन और नामकरण इस प्रकार किया है —

(1) आदिकाल - 7वीं शती के मध्य से 14वीं शती के मध्य तक।
(2) भक्तिकाल - 14वीं शती के मध्य से 17वीं शती के मध्य तक।
(3) रीतिकाल - 17वीं शती के मध्य से 19वीं शती के मध्य तक।
(4) आधुनिक काल - 19वीं शती के मध्य से अब तक।

आधुनिक काल को उन्होंने 4 भागों में बांटा है - पुनर्जागरण काल (भारतेन्दु काल) सं० 1877 से 1900 ई० तक, जागरण-सुधार काल (द्विवेदी काल) सं० 1900 - 1918 ई०, छायावाद काल - सं० - 1918 - 1938 ई०, छायावादोत्तर काल - (i) प्रगति प्रयोग काल - 1938 ई० से 1953 ई० (ii) नवलेखन काल - 1953 ई० से अब तक।

* यह तो हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन हुआ। जहाँ तक नामकरण का सवाल है तो इसमें आदिकाल - (हिन्दी के प्रारम्भिक काल) और दूसरा उत्तरमध्यकाल (रीतिकाल के नामकरण) को लेकर है। आदिकाल का विविध विद्वानों ने इस प्रकार नामकरण किया है —

(1) चारणकाल - ग्रियर्सन ने यह नाम राजदरबारों में राजा की स्तुति करने वाले चारणों के आधार पर दिया है।

(2) प्रारम्भिक काल - मिश्र बंधुओं ने 643 ई० से 1387 ई० की तक के काल को प्रारम्भिक काल का नाम दिया है। यह हिन्दी की शुरुआत का द्योतक है।

(3) वीरगाथा काल - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने इतिहास में संवत 105 से लेकर संवत 1375 तक की कालावधि को वीरगाथा काल कहा है। यह नाम उन्होंने रासो साहित्य के आधार पर दिया है। बाद में उनके परवर्ती विद्वान डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी ने उन सभी रासो ग्रंथों में से अधिकांश को अप्रामाणिक सिद्ध किया। साथ ही उन्होंने इस बात पर बल दे दिया कि इस काल में वीरकाव्य के अतिरिक्त धार्मिक श्रृंगारिक और लौकिक साहित्य की भी रचना हुई।

सिद्ध सामंत काल - महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने इस काल का नाम 'सिद्ध सामंत काल' रखा है। ऐसा उन्होंने इस कालखण्ड के सामाजिक जीवन पर सिद्धों के प्रभाव और राजनीतिक जीवन पर सामन्तों के वर्चस्व के कारण किया है। लेकिन इस नामकरण में साहित्यिक प्रवृत्तियों पर ध्यान नहीं दिया गया।

संधि एवं चारणकाल - डॉ॰ रामकुमार वर्मा द्वारा आदिकाल को इन दो खण्डों में विभाजित कर 'सन्धिकाल' एवं 'चारणकाल' नाम दिया है। संधिकाल में भाषा की संधि हुई है तथा चारणकाल वीर काव्यों के गायकों की ओर संकेत करता है।

आदिकाल - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने इस काल के साहित्य को संदिग्ध और अप्रामाणिक माना है। फिर भी इस काल की दो विशेषता को नवीन ताजगी और अपूर्व तेजस्विता को ध्यान में रखकर उन्होंने इस काल का नाम 'आदिकाल' स्वीकृत किया।

भक्तिकाल और उत्तरमध्यकाल के नाम पर विवाद नहीं है। संवत 1375 से लेकर संवत 1700 तक के काल को भक्ति काल माना गया है। इस काल में सूर, तुलसी, कबीर, जायसी जैसे भक्त कवियों ने अपनी रचनाओं से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। इसके बाद के काल अर्थात संवत 1700 से लेकर 1900 तक के खण्ड को शुक्ल जी ने रीतिकाल का नाम दिया है। अन्य विद्वानों की राय को भी जानना उचित है —

मिश्रबन्धु — अलंकृत काल
आचार्य रामचंद्र शुक्ल — रीतिकाल
पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र — श्रृंगार काल
रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' — कलाकाल

~~इनके मत अथ~~ इन सभी आचार्यों और विद्वानों के मत का विश्लेषण करते हुए डॉ० भगीरथ मिश्र जी ने अपना मत 'रीतिकाल' को ही दिया है। वे कहते हैं — "कलाकाल कहने से कवियों की रसिकता की उपेक्षा होती है तो श्रृंगार काल कहने से वीर रस और राजाओं की प्रशंसा की। किंतु रीतिकाल कहने से प्रायः कोई भी महत्वपूर्ण विशेषता उपेक्षित नहीं होती और प्रमुख प्रवृत्ति सामने आ जाती है। यह युग रीति-पद्धति का युग था, यह धारणा वास्तविक रूप से सही है।" इस प्रकार 'रीतिकाल' नामकरण अधिक तर्कसंगत एवम् वैज्ञानिक प्रतीत होता है।

19वीं शताब्दी से अबतक के कालखण्ड का नामकरण आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'गद्य काल' किया है। आधुनिक काल में गद्य के पूर्ण विकास एवं प्रधानता को देखते हुए यह नामकरण उचित प्रतीत होता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण प्रेस की स्थापना को हिन्दी साहित्य में आधुनिकता का प्रवेश माना है। श्यामसुन्दर दास इसे 'नवीन विकास का युग' कहते हैं। इसमें सच्चाई भी है। गद्य की नवीन विधायें इस युग में आकार लेती हैं। काव्य में भी 'छायावाद' नाम से नयी काव्य प्रवृत्ति का उदय हुआ है। 'आधुनिक काल' को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने तीन चरणों में विभक्त किया है और इन्हें प्रथम उत्थान, द्वितीय उत्थान तथा तृतीय उत्थान कहा है। आधुनिक

हिन्दी विद्वान इसे 'भारतेन्दु युग' अथवा 'पुनर्जागरण काल', 'द्विवेदी युग' अथवा 'जागरण- सुधार काल', 'छायावाद युग' तथा छायावादोत्तर युग कहते हैं। इसके अतिरिक्त 'प्रगतिवाद', 'प्रयोगवाद', 'नवलेखन काल' 'नयी कविता', 'नयी कहानी', जैसी प्रवृत्तियाँ भी साहित्य में स्थान प्राप्त कर चुकी हैं। इस काल को आधुनिक काल कहने से सारी प्रवृत्तियों का समावेश हो जाता है इसलिए इस काल को आधुनिक काल कहना ही उचित है।

भारत 1947 ई० में स्वतंत्र हुआ। इसके पूर्व लेखकों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं प्राप्त थी। 1947 ई० के बाद लेखकों ने खुलकर अपने विचारों को साहित्य में व्यक्त किया। इस कारण स्वातंत्र्योत्तर साहित्यिक प्रवृत्तियों की भी चर्चा आधुनिक काल के इतिहास में होती है। आधुनिक मानव में व्याप्त कुंठा, निराशा, प्रतिरोध, (व्यवस्था के प्रति) आक्रोश, आदि को वाणी देने के लिये कविता और कहानी इन दोनों विधाओं में ~~कई परिवर्तन~~ काफी बदलाव आया। और यह स्वाभाविक भी था। इसके बारे विस्तार आपको अगली इकाईयों में बताया जायेगा। तब तक आप हमेशा हमसे जुड़े रहें, संपर्क में रहें। -ई-कंटेन्ट को पढ़ें, समझें, न समझ में आये तो ~~वर्किंग~~ कार्य अवधि (working hours) में कॉल करें। इसके अतिरिक्त कोरोना महामारी से बचाने के लिए दिये गये निर्देशों का पालन करें। यदि आपने कोरोना से बचाव के लिए कोई कार्य किया है अथवा किसी की मदद की है तो कृपया हमें बतायें। हम महाविद्यालय को इस बारे में सूचित करेंगे।

स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें, अध्ययन रत रहें।

(signature)
विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग
श्री गुरु गोबिन्द सिंह कॉलेज पटना सिटी
मोबाइल नं०- 9431881251